छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार।
जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के जोश से दुनियां के दिलों की बातों को, चाहे वह जीतने वाली हो या हारने वाली हो छिपने नहीं देगा। यह बात बिल्कुल जाहिर लिखी है।

एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखिर दुख सुख।। १९ ।।

इस झूठी दुनियां के लोग अपने मुख से ही अपने दुःख-सुख का बयान स्वयं करेंगे, क्योंकि जिन्होंने जैसा कर रखा है, वह अपना सब जानते हैं।

जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची माहें सब।
सब एक हैयातीय का, करसी सिजदा तब।। २० ।।

जब यह बातूनी रहस्य जाहिर हो गए, तो सब दुनियां वाले एक पारब्रह्म जो अखण्ड है, उसी का सिजदा बजाएंगे।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ५२१ ।।

दज्जाल का निसान

कह्या दज्जाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि वक्त आखिरत में शैतान गधे पर सवार होगा, जिसकी एक आंख नहीं होगी। वह अपनी जाहिरी आंख से खुदा को नहीं देखेगा और आत्मदृष्टि उसके पास नहीं होगी।

अजाजील काना तो रानियां, जो बातून नजर करी रद।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद।। २ ।।

वह ऊपर की आंख से झूठे संसार की नजर से आदमी के ऊपर के शरीर को ही देखेगा, इसलिए अजाजील को काना कहकर रद्द कर दिया है, क्योंकि इसकी बातूनी नजर नहीं है।

गधा बड़ा दज्जाल का, कह्या ऊंचा लग आसमान।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रांन।। ३ ।।

अजाजील रूपी दज्जाल का गधा ऊंचा आसमान तक बताया है। कहा है कि सात समुद्र का पानी उसकी जांघ तक नहीं पहुंचेगा।

गधा एता बड़ा तो है नहीं, कह्या हवा तारीक मकान।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान।। ४ ।।

इतना बड़ा गधा तो कहीं है ही नहीं। इस निराकार के सारे ब्रह्माण्ड को ही गधे का आकार बताया है। कुंन शब्द से पैदा हुई झूठी दुनियां ही गधे का रूप है।

ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल।
सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल।। ५ ।।

वरना इतना बड़ा गधा हो तो उसके अस्वार का कद कितना बड़ा होना चाहिए। जब दज्जाल, सवार तथा उसका गधा नीचे गिर पड़े तो दुनियां की क्या हालत होगी?

Nijanand App

लानत जो अजाजील की, ले अबलीस बैठा दिल।
सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल।। ६ ।।

अजाजील को लानत लगी और शैतान अबलीस (नारद) सबके दिलों पर बैठ गया। यह ज्ञान की बातों को नहीं लेने देता। चाहे दुनियां वाले कितनी ही शक्ति लगा लें।

सोई दाभा या गधा दज्जाल, अबलीस दिलों पातसाह।
सो दुनी आंख फोड़ी दुस्मने, लेने देवे न बातून राह।। ७ ।।

संसार के सभी आदमियों के दिलों पर शैतान की बादशाही होने के कारण इनको ही दज्जाल कहा है। इस शैतान अबलीस ने दुनियां को एक आंख से अन्धा कर रखा है जो बातूनी ज्ञान के भेद नहीं समझने देता।

ना तो लानत जो दज्जाल की, सो दुनी को लगे क्योंकर।
सो वास्ते ताबे दज्जाल के, हुई बातून आंख बिगर।। ८ ।।

वरना जो लानत दज्जाल अजाजील को लगी है, उसके लिए दुनियां गुनहगार होकर क्यों कष्ट उठाए। दुनियां इसलिए दुःखी हो रही है कि वह दज्जाल के अधीन है जिसके पास बातूनी ज्ञान की दृष्टि नहीं है।

दुनी सिजदा न किया, रूह महंमद आदम पर।
इन भी देख्या वजूद को, ना खोले बातून नजर।। ९ ।।

दुनियां वालों ने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज के स्वरूप को नहीं पहचाना। उन पर सिजदा नहीं किया। बातूनी नजर न होने के कारण से दुनियां वालों ने इनके तन को ही देखा।

तो हुआ दिलों पर पातसाह, सोई राह चलावत।
जिन राह चलते अबलीस को, दूर किया दे लानत।। १० ।।

यह इसी वास्ते कि दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस बादशाह बनकर बैठा है, जिसे लानत लगी। वह विष्णु भगवान अपनी ही पूजा करवाते हैं।

इन बिध लगी लानत, अजाजील की दुनी को।
जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे हुएसों।। ११ ।।

अजाजील की दुनियां को भी इस तरह से लानत लग गई। जो हालत सिरदार (प्रमुख) अजाजील की हुई, दुनियां उसके अधीन होने से सबकी वही हालत हुई।

सिपारे उनईस में, कह्या निकाह आदम हवा।
सो पसरी बीच दुनी के, इत अबलीस जो पैदा।। १२ ।।

कुरान के उन्नीसवें सिपारे में आदम और हौवा की शादी का बयान लिखा है। ऐसा ही सम्बन्ध दुनियां वालों का अबलीस से हो गया।

जेता कोई बनी आदम, कह्या निकाह अबलीस से।
कह्या दुनी बीच अबलीस, लोहू ज्यों तनमें।। १३ ।।

संसार में जितने भी आदमी की औलाद हैं, सबकी शादी शैतान अबलीस से हुई है। इस तरह शरीर में खून की तरह यह अबलीस दुनियां के अन्दर बैठा है।

Nijanand App

कह्या वजूद आदमी, सैतान अमल दिल पर।
दुनी होसी इन बिधकी, कहे बीच हदीस पैगंमर।। १४ ।।

तन तो आदमी का है, किन्तु दिल पर हुकूमत शैतान की है। इस तरह से दुनियां की हालत वक्त आखिरत में शैतान जैसी हो जाएगी। यह बात रसूल साहब ने हदीस में लिखी है।

दोऊ तरफों कह्या पेटमें, और दुनी हाथ बीच दोए।
इन बिध रहे बीच आदम, याको किन बिध मारे कोए।। १५ ।।

यह अबलीस शैतान दुनियां के पेट में घुसा है और अन्दर से दोनों को काबू कर रखा है। इस वास्ते दुनियां वाले इस शैतान को कैसे मार सकते हैं?

कह्या पैदा आदम हवा से, याकी असल बिध इन।
सो बाहेर ढूंढ़ें माएना जाहेरी, बिना मगज सुकन।। १६ ।।

कहा है कि दुनियां आदम और हौवा से पैदा हुई है। इनकी पैदाइश ही झूठ से है, इसलिए दुनियां वाले इन वचनों के गुझ (गुप्त) रहस्यों को समझे बिना शैतान को बाहर ढूंढ़ते हैं।

और हदीस में यों कह्या, दुनी राह देखे जाहिर दज्जाल।
माएना न पावें ढूंढ़ें जाहिर, कहे हम लड़सी तिन नाल।। १७ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा है कि दुनियां वाले दज्जाल को बाहर ढूंढ़ रहे हैं। वह कहते हैं कि जब दज्जाल आएगा, हम लड़ेंगे। इसके बातूनी गुझ (गुह्य) रहस्यों को जानते नहीं हैं।

सोई सूरत धुआं दज्जाल, दुनी तिन दई उरझाए।
मुसाफ बरकत ईमान बिन, छूटी आखिर हक हिदायत ताए।। १८ ।।

वह दज्जाल धुएं की तरह हर एक के अन्दर बैठा है और सीधे रास्ते नहीं चलने देता। उलझा देता है। कुरान के ज्ञान, बरकत और ईमान के बिना वह खुदा के इलम को भी भूल गए।

कयामत फल जिन सों गया, उलट बलाए लगी आए।
आग नजर आई दोजख, रही बदफैल देहेसत भराए।। १९ ।।

कयामत के समय में मिलने वाला फल भी दुनियां वालों से चला गया और उलटे संकट में फंस गए। अब उनको सामने दोजख की अग्नि दिखाई देती है और अपने किए कुफरों का डर उनको मार रहा है।

धुआं करे मार दिवाना, कह्या ऐसेही ईमान बिन।
छूटी मुसाफ नसीहत बरकत, तब ऐसा क्यों न होए हाल तिन।। २० ।।

जिस तरह से धुन्ध में कुछ सूझता नहीं है, उसी तरह से ईमान के बिना दुनियां हो गई। जिनसे कुरान का ज्ञान छूट गया और बरकत चली गई, तो उनका ऐसा हाल क्यों न हो?

कहे अबलीस मैं घेरोंगा, राह मारों तरफ चार।
वह जाने लई राह दीन की, इन बिध देऊं राह मार।। २१ ।।

अबलीस कहता है कि दीन की राह पर चलने वालों को मैं चारों तरफ से घेरकर मारूंगा (एक बेईमान औरत, दूसरे बाजे बजावन हार, तीसरे पढ़ने वाले इलम के, चौथे जादूगर होशियार)। वह समझेंगे कि हम दीन के रास्ते पर चल रहे हैं, जबकि वह भटक जाएंगे।

Nijanand App

ढूंढ़े जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन।
जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन।। २२ ।।

जाहिर लोग कयामत के निशानों को जाहिरी देखने की इन्तजार में हैं, क्योंकि यह दज्जाल के अधीन हैं। इनकी आत्मदृष्टि नहीं है।

सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल।
पोहोंचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल।। २३ ।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में दज्जाल की बड़ी साहेबी कही है। लिखा है जंगलों से दरिया बहेंगे। इसका अर्थ है कि दज्जाल के मानने वाले ही शून्य दिलों के अधीन नए-नए सम्प्रदाय और धर्म चलाएंगे।

जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए।। २४ ।।

जब शुरू से ही दुनियां के नसीब में यही लिखा है, तो उसी अनुसार ही दुनियां अब कर रही है और अब खुदा (धनी) के हुकम के बिना दुनियां नया रास्ता नया कार्य कैसे कर सकती है।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ५४५ ॥

सूरज मगरबका निसान

कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखिर।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिर के समय सूर्य पच्छिम से उदय होगा और उसमें रोशनी नहीं होगी। वह आखिरत को दुनियां के दिलों पर छा जाएगा।

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कह्या रोसन नाहीं तित।
तो अक्स सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत।। २ ।।

पच्छिम की दिशा को मुंह करके पूजा करने वाले मुसलमानों के दिलों पर जो ज्ञान था, वह हट गया। अब वहां अंधेरा हो गया। उनके दिलों पर जो ज्ञान का सूर्य था, वह ईमान चले जाने से अन्धकार में बदल गया।

रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे।
सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए।। ३ ।।

इसलिए मक्का के मानने वाले मुसलमानों के दिलों पर बिना रोशनी का सूरज कहा है। अब देखो मक्का से लिखकर भी आ गया है कि कयामत का यह निशान जाहिर हो गया है।

ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखिर।
मता ले जासी जबराईल, तब रेहेसी अंधेर दिलों पर।। ४ ।।

रसूल साहब ने पहले ही इशारतों में कहा था कि आखिर के समय ऐसा हो जाएगा कि जबराईल फरिश्ता आखिर के समय में मक्का से सब न्यामतें उठाकर हिन्द में जहां इमाम मेंहेंदी साहब आएंगे, उनके पास ले जाएंगे। तब मक्कावासियों के दिलों पर अज्ञानता का अंधेरा छा जाएगा।

Nijanand App